

प्रस्तावना

मध्य भारत स्थित छत्तीसगढ़ एक जनजातीय बाहुल राज्य है जहां कई जनजाति के लोग अपनी अलग-अलग संस्कृति, अवधारणाओं और परंपराओं को आज भी जीवंत बनाए हुए हैं | जल, जंगल, ज़मीन पर निर्भर इस राज्य में अनेक जनजातियों ने अपना जीवनयापन किया लेकिन बदलते दौर के साथ-साथ इस जनजातीय बहुल राज्य ने औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण का हाथ थाम कर राज्य को विकास के पथ पर भी अग्रसर किया। छत्तीसगढ़ देश का तेजी से बढ़ता राज्य है। अपनी भूगोलिक उपस्थिति के कारण छत्तीसगढ़ का यह भू-भाग अनादिकाल से संस्कृतियों का मिलन स्थल रहा है। आर्य और अनार्य संस्कृतियों ने देश के मध्य क्षेत्र के जिस भू भाग पर सह अस्तित्व के साथ विकास की दिशा में कदम बढ़ाए, उसमें यह भी एक क्षेत्र था। विविधता पूर्ण संस्कृतियों, समाजों और सभ्यताओं का यह मेल छत्तीसगढ़ में आज भी साक्षात् नजर आता है। छत्तीसगढ़ के दामन में जहां अबूझमाड नया इलाका भी है जो नाम के अनुरूप अबूझ ही है, वहीं भिलाई भी जो अपने आप में अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाए हुए है। भिलाई छत्तीसगढ़ ही नहीं देश के औद्योगिकीकरण एवं सामर्थ्य का प्रतीक है। आज का छत्तीसगढ़ देश का पावर हब बनने को तत्पर है। छत्तीसगढ़ देश के उन चंद राज्यों में शरीक है जो बिजली उत्पादन की दृष्टि से बहुल ही नहीं पावर कट शून्य भी है।

1 नवंबर, 2000 को जब जन अपेक्षा को स्वीकारते हुए इस राज्य ने आकार लिया था तब से लेकर अब तक छत्तीसगढ़ बहुत कुछ बन चुका है, आकार ले चुका है। वर्तमान समय में राज्य सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और औद्योगिक रूप से सबल है किन्तु कई ऐसी जनजाति बहुल इलाके हैं जो आज भी विकास की मुख्यधारा से पिछड़े हुए हैं तमाम किस्म की सुविधाओं के बावजूद आज भी कई ऐसी जनजाति समूह हैं जो दैनिक दिनचर्या के प्राथमिक सुविधाओं से आज भी वंचित हैं |

पृथक छत्तीसगढ़ की मांग ही इसी उद्देश्य से की गई थी ताकि सरकार और जन के बीच का फासला कम हो सके, सुविधाओं की उपलब्धता में होने वाली देरी से निजात मिल सकें हालांकि इस उद्देश्य की प्राप्ति को लेकर कई सकारात्मक कार्य किए गए लेकिन उसे पूर्णतया के परिप्रेक्ष्य में नहीं रखा जा सकता क्योंकि आज भी कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां के बाशिंदे अपना जीवन यापन जल, जंगल, ज़मीन के भरोसे ही कर रहे हैं। सरकारी

गतिविधियां और नीतियाँ उनके द्वार दस्तक दे चुकी हैं बावजूद उसके विकास की डोर वहाँ आधार में लटकी हैं इसकी वजह कई हो सकती हैं जो सरकार की गतिविधियों पर सवालिया निशान लगाती हैं न केवल सरकार पर बल्कि सम्पूर्ण प्रशासन तंत्र पर सवालिया निशान लगाती हैं और यह सोचने पर भी मजबूर करती है की आखिर वो कौन सी वजह है जिसके कारण आदिवासी अपने हक को पाने के लिए आज भी संघर्ष कर रहे हैं? क्यों सभी एक ऐसे तंत्र का न केवल आश्रय बल्कि हिस्सा बनने लगे हैं जो भारतीय मानक तंत्रों से बिल्कुल परे हैं। स्थिति बद से बदतर हो चली है जो विश्वास भारत सरकार के प्रति होता था आज वो विश्वास आदिवासी हथियारों को समर्पित कर चुके हैं। हथियारों के दम पर अपने हक की लड़ाई लड़ने वाले इन लोगों की कार्यशैली में बीते कुछ दिनों से जो परिवर्तन देखने को मिला रहा है उसे देखकर ऐसा लगने लगा है कि ये लड़ाई नाकारी व्यवस्था को लेकर प्रतिरोध की नहीं बल्कि वर्चस्व की लड़ाई को लेकर बुना गया जाल जैसा नज़र आने लगा है।

पत्रकारिता एवं जनसंचार की छात्रा होने के कारण मेरी रुचि अखबार पढ़ते समय हमेशा नक्सली हमलों के कवरेज और उनके द्वारा स्थिति विशेष के संदर्भ में की गयी अभिव्यक्ति के प्रयासों को देखने में ज्यादा रही है। हाल ही में छत्तीसगढ़ में घटित झीरम घाटी नक्सली घटना के संदर्भ में समाचार पत्रों की अभिव्यक्ति मेरे रुचि के अनुरूप था कि मैं ऐसे विषय का चयन शोध हेतु करूँ जो अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से अपनी भूमिका को पत्रकारिता एवं जनसंचार के अध्ययन के प्रयासों तथा सैद्धांतिक विवेचन का अवसर प्रदान करे।

चूँकि मेरी जन्मभूमि छत्तीसगढ़ ही है इसलिए मुझे इस प्रदेश की भौगोलिक सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक स्थिति का यथोचित ज्ञान है जिससे मुझे लगा कि यदि इस विषय पर मैं शोध करती हूँ तो यह मेरे लिए आसान भी होगा और मैं इस विषय से आत्मीयरूप से जुड़कर इसके साथ न्याय करने का प्रयास भी कर पाऊँगी।

सारांश

सहायक प्राध्यापक राजेश लहकपूरे जी के निर्देशन में "छत्तीसगढ़ की झीरम घाटी नक्सली घटना : समाचार पत्रों की भूमिका" (नवभारत और दैनिकभास्कर रायपुर संस्करण के विशेष संदर्भ में) विषय का चयन किया। इससे मुझे छत्तीसगढ़ में व्याप्त लाल आतंक के संदर्भ में जानकारी, सरकार द्वारा उठाए गए कदम और नक्सलियों द्वारा उठाए गए कदम से प्रभावित लोगों की यथार्थ स्थिति के संदर्भ में जानकारी मिली तथा नक्सली हमलों को लेकर समाचार पत्रों द्वारा की गयी अभियक्ति और भूमिका का अध्ययन करने अवसर प्राप्त हुआ। मैंने अपने शोध कार्य को छः अध्यायों में विभाजित किया है।

पहला अध्याय 'छत्तीसगढ़ राज्य एक ऐतिहासिक परिदृश्य' इस अध्याय में मैंने छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण से लेकर उसके उत्तरोत्तर विकास की बात करते हुए उसके वर्तमान स्वरूप को बताने की कोशिश की है।

दूसरा अध्याय 'समाचार पत्रों का संक्षिप्त परिचय एवं जनसंचार में समाचार पत्रों की भूमिका' इस अध्याय में शोध विषय से संबन्धित चयनित समाचार पत्र (नवभारत और दैनिक भास्कर) का परिचात्मक संदर्भ देते हुए जनसंचार के क्षेत्र में समाचार पत्रों की भूमिका समाज में सपष्ट करने का प्रयास किया है।

तीसरा अध्याय "भारत में नक्सलवाद समस्या का आरंभ एवं प्रसार" इस अध्याय में भारत में नक्सली कैसे अपने अस्तित्व में आते हैं और समाज में अपनी जड़े फैलाते हुए कैसे छत्तीसगढ़ पहुंचते हैं इसका विवरण प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ निर्माण के बाद से इस जिले में घटित सिलसिलेवार नक्सली हमलों के संदर्भ में कुछ तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं जिससे कि झीरम घाटी नक्सली हमले की गंभीरता स्पष्ट हो सके।

चौथा अध्याय 'झीरम घाटी नक्सली घटना एवं सलवा जूडम की विवेचना' इसमें झीरम घाटी नक्सली हमले की विवेचना विस्तार पूर्वक करने की कोशिश की गयी है। साथ ही साथ सलवा जूडम के गठन के उद्देश्य को बताते हुए त्रिकोणीय परिप्रेक्ष्य में, सरकार, सलवा जूडम और नक्सली की बात भी रखने की कोशिश की है तथा ऑपरेशन ग्रीन हंट और नक्सलियों की कार्यप्रणाली पर भी विस्तार से चर्चा करते हुए आदिवासियों की व्यथा को स्पष्ट करने का भी प्रयास किया गया है।

पाचवा अध्याय ' सुकमा जिले की झीरम घाटी नक्सली घटना : समाचार पत्रों की भूमिका (आंकड़ों का संकलन, प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण) इस अध्याय में विषय से संबन्धित समस्त आंकड़ों को विभिन्न चरणों में स्पष्ट करने का प्रयास किया है जिसमें झीरम घाटी नक्सली हमले को लेकर मीडिया कर्मियों का विचार कैसा रहा, समाचार पत्र पाठकों की धारणा घटना को लेकर कैसी बनी, और दोनों समाचार पत्रों के द्वारा झीरम घाटी नक्सली घटना को किस तरह से प्रकाशित किया गया है इसका विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्याय में चार्ट और सारणी का प्रयोग किया गया है ताकि यह सब समझने में आसानी हो और आकर्षक भी लगे ।

इस शोध में यदि नक्सली एवं पत्रकारिता अध्ययन के कुछ पहलू छूट गए हैं तो मेरी शोध की सीमा हो सकती है। परंतु नक्सली घटना से संबन्धित समाचार पत्रों की अभिव्यक्ति के क्षेत्र में यह (किंचित) भी योगदान दे पाते हैं तो मैं अपना प्रयास सार्थक समझूंगी।

अध्ययन का क्षेत्र

नक्सली समस्या और अखबारों की भूमिका को किसी भी भौतिक क्षेत्र में प्रतिबंधित करके नहीं रखा जा सकता, भारत में बहुत से समाचार पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं, जिसका पूरा अध्ययन कर पाना असंभव है। शोध की विशालता को देखते हुए इसका शोध क्षेत्र सीमित किया और समाचार पत्रों में नवभारत एवं दैनिक भास्कर के रायपुर संस्करण का अध्ययन किया। नक्सली और आदिवासियों से संबन्धित अनेक समस्याएँ भारत के कई राज्यों में व्याप्त हैं जिसमें से छत्तीसगढ़ भी एक राज्य है। चूंकि छत्तीसगढ़ पूरा का पूरा रेड कार्पेट ज़ोन में आता है अतः इसकी व्यापकता को देखते हुए इसमें भी क्षेत्र को सीमित करते हुए छत्तीसगढ़ में घटित झीरम घाटी नक्सली घटना को विशिष्ट रूप से चुना गया है।

इस शोध में नक्सली घटना के संबंध में अखबारों की भूमिका का एक समयावधि में अध्ययन किया है, जिसमें वर्ष 26/05/2013-26/06/2013 तक के एक माह चयनित समाचार पत्रों द्वारा घटना के प्रस्तुतीकरण का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

- झिरम घाटी नक्सली हमलों के संदर्भ में नवभारत एवं दैनिकभास्कर समाचार पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन।
- नक्सली हमलों के संदर्भ में लिए गए समाचार पत्रों की संपादकीय पृष्ठ के अध्ययन द्वारा उनके दृष्टिकोण की जांच-पड़ताल।
- आदिवासियों और नक्सलियों की यथार्थ स्थिति के संदर्भ में चयनित समाचारपत्रों के प्रस्तुतीकरण का विश्लेषण।
- आदिवासी, सरकार और नक्सलवाद के संबंध में त्रिकोणिय एवं सामांतर समझ विकसित करने में दोनों समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण।

अध्ययन का महत्व

अभिव्यक्ति की राजनीति में दो काम एक साथ होते हैं। एक तरफ यह प्रक्रिया वर्चस्वशाली तबके के वर्चस्व को बनाती है तो दूसरी ओर वह फिर से ऐसी स्थितियाँ पैदा करती है की जो भी नई अभिव्यक्तियाँ पैदा की जाएँ, वह पुराने पैटर्न पर ही हों। इस राजनीति के पीछे क्या मंशा काम करती होगी – यह तब और भी स्पष्ट रूप से सामने आता है जब हम इस बात की तहकीकात करते हैं कि आखिर क्योंकर व्यक्ति या समाज किसी कथ्य को कहता है। इस बात का व्यापक तौर पर मतलब क्या है कि किसी विषय वस्तु को मीडिया द्वारा उछाला जाता है या फिर किसी अन्य विषय वस्तु को नहीं उछाला जाता है। इस पूरे सवाल के पीछे जो घृणित राजनीति छिपी हुई है उससे बचने के लिए लगातार मीडिया प्रबंधकों द्वारा न्यूज की मार्केट वैल्यू जैसे चालू मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि किसी विषयवस्तु के किसी एक या कुछ आयामों को मीडिया यदि पकड़ता है तो यह इसकी प्रकृति द्वारा निर्धारित तो होता ही है इसके आलवा इनके चुनाव में उन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का भी बड़ा योगदान होता है जो हजारों साल से अभिव्यक्ति के पीछे की गई कसरत (राजनीति) का परिणाम होती हैं। हाँ इतना जरूर होता है कि कई बार इन अभिव्यक्तियों में उस विश्व संघर्ष की भी झलक मिलती है जिसके लिए हमेशा से ही समाज का एक तबका अपने को झोंकता रहा है ताकि मानव के इस समाज को और ज्यादा

मानवीय बनाया जा सके। इसलिए जब हम मीडिया और राजनीति कि अभिव्यक्ति पर बात कर रहे होंगे, तब वर्चस्व को स्थापित करने वाली प्रक्रियाओं तथा चेतना और अधिकार के सवालों से जुड़ी हुई अभिव्यक्तियों को अलग अलग करके देखना होगा।

शोध समस्या (परिकल्पना)

- नक्सली घटना को लेकर चयनित समाचार पत्रों का कवरेज हमेशा एक तरफा होता है।
- कॉर्पोरेट जगत से जुड़े समाचार पत्र नक्सलवाद से जुड़ी खबरों का संप्रेषण केवल खानापूति के उद्देश्य से करते हैं। उनके द्वारा दी गयी सूचना में विषय से संबन्धित सम्पूर्ण ज्ञान क्षेत्र का कोई आकलन हमारे शिक्षायी विमर्श का हिस्सा नहीं होता है।
- आदिवासी, सरकार और नक्सलवाद के प्रति चयनित समाचार पत्रों की अभिव्यक्तियाँ सभ्य व्यवस्था के समाजसेवकों द्वारा रची गई होती हैं जिसमें न हाशिये के लोगों की आवाज़ होती है और न ही उनकी भावनाओं का प्रगटिकरण।
- चयनित समाचार पत्र नक्सली घटना के हर एक पहलू पर सूचना उपलब्ध नहीं कराते है।

शोध प्रविधि

अंतर्वस्तु विश्लेषण- झीरम घाटी नक्सली घटना; समाचार पत्रों कि भूमिका पर शोध हेतु चयनित समाचार पत्र (दैनिक भास्कर और नवभारत दैनिक समाचार पत्र) का तुलनात्मक अध्ययन अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि द्वारा किया गया है।

साक्षात्कार- झीरम घाटी नक्सली घटना के संदर्भ में चयनित समाचार पत्रों के संपादकों और का साक्षात्कार विधि द्वारा दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया गया है।

तथ्य संकलन के लिए प्रयोग किया गया है। झीरम घाटी नक्सली घटना को लेकर दोनों समाचार पत्रों का कवरेज कैसा रहा इसे जानने के लिए शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली का चयन किया गया है। जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर क्षेत्र से 50 समाचार पाठकों एवं 50 मीडिया कर्मियों द्वारा प्रश्नावली भरवाया गया।

इसके साथ ही साथ आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण, प्रस्तुतीकरण और व्याख्या संख्यात्मक एवं व्याख्यात्मक दोनो रूपों में किया गया है

तथ्य संकलन के उपकरण

- साक्षात्कार
- प्रश्नावली

शोध की सीमाएँ

प्रस्तुत शोध कि निम्नलिखित सीमाएं है-

- नक्सली घटना से अवगत होने के लिए हमने छत्तीसगढ़ राज्य के सुकमा जिले में 26/05/2013 को घटित झीरम घाटी नक्सली घटना को लिया।
- झीरम घाटी नक्सली घटना के संबंध तथ्यों के संकलन हेतु दैनिक भास्कर एवं नवभारत समाचार पत्र के रायपुर संस्करण का चयन किया।
- दैनिक भास्कर एवं नवभारत समाचार पत्र के अंतरवस्तु विश्लेषण के लिए 26/05/2013 से 26/06/2013 तक का समय लिया है। जिसमें मुख्य पृष्ठ और समपादकीय पृष्ठ का विशेष रूप से विश्लेषण किया है
- प्रश्नावली को दो वर्गों में विभाजित किया गया है | समाचार पाठकों एवं मीडिया कर्मियों के 50 उत्तरदाताओं द्वारा प्रश्नावली को भरवाया गया है।
- दैनिक भास्कर एवं नवभारत समाचार पत्र के साथ प्रकाशित होने वाले अन्य सप्लीमेंट को नहीं लिया गया है।
- समायावधि की कमी को ध्यान में रखते हुए केवल चयनित समाचार पत्रों के संपादकों का साक्षात्कार लिया गया है।